फाग की फुहारें

होली का उत्तम काव्य संकलन

सम्पादक: विष्णुस्वरूप पाण्डेय
मिथलेशकुमार पाण्डेय

संग्रहकर्त्ता: हरस्वरूप पाण्डेय
बृह्मस्वरूप पाण्डेय

संयोजन : कमलेशचंद्र पाण्डेय

सहयोग : बृजेशकुमार पाण्डेय
राकेशचंद्र पाण्डेय

विषय सुची

श्रद्धा–सुमन 3

होली आई (छ.सं. 1 से 8) 7

अनुराग की होली (छ.सं. 9 से 16) 9

राग की होली (छ.सं. 17 से 60) 11

रंगीली होली (छ.सं. 61 से 88) 24

हुरिहारी होरी (छ.सं. 89 से 110) 32

होरी सी होरी (छ.सं. 111 से 120) 38

होली के चौबोला छंद (चौ.सं. 121 से 125) 41

होली के दोहे (दो.सं. 126 से 146) 42

कविवर बिहारी के होली के दोहे (दो.सं. 147 से 150) 44

होली के सोरठे (सो.सं. 151 से 152) 44

श्रद्धा-सुमन

साहित्य और संगीत के साधक पाण्डेय परिवार मैनपुरी के अपने पुण्यात्मा पूर्वजों को श्रद्धा-सुमन के रूप में यह सरस संग्रह समर्पित है। स्व. चम्पालाल जी इस परिवार के मुखिया थे। यद्यपि आपके एक बड़े भाई भी थे लालता प्रसादजी, लेकिन उनका अल्पायु में ही स्वर्गवास हो गया था। पल्लवित और पुष्पित हो परिवार के इस उपवन को सुवासित करने का उन्हें अवसर न मिला।

चम्पालालजी (दादाजी) प्रेमराजजी के द्वितीय पुत्र थे। आपका जन्म सन् 1898 में हुआ था। आप समाज में एक ख्याति प्राप्त गायक के रूप में प्रतिष्ठापित थे। समवयस्कों व नवयुवकों को भी आप संगीत साधना हेतु प्रोत्साहित करते रहते थे। इस हेतु सन् 1940 में आपने होली के शताधिक सरस गेय पदों का एक सुन्दर संग्रह टंकणित पाण्डुलिपि के रूप में समाज को दिया जिसका कई दशकों तक होली प्रेमियों द्वारा भरपूर उपयोग किया गया। इससे पूर्व होली के इतने गेय पद एक साथ एक संग्रह में कभी प्राप्य न थे। 'रंग झर बरसेरी' जैसे अनूठे प्रकाशन में इस अपूर्व संग्रह ने एक उत्प्रेरक का कार्य किया।

1940 की इस पुरानी अप्राप्य पाण्डुलिपि के सुन्दर पदों को इस संकलन में पुनः प्रकाशित करते हुये हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस संकलन को और अधिक लोकप्रिय व उपयोगी बनने के विचार से इसमें हिन्दी के श्रेष्ठ कवियों के होली विषयक शताधिक उत्तमोत्तम सरस छन्दों, कवित्तों व सवैयों व दोहों का भी समावेश कर लिया गया है ताकि साहित्यानुरागी विज्ञजन भी इसका आनन्द लें।

प्रेमराजजी के तृतीय पुत्र के रूप में सन् 1902 में जन्में ओंकारनाथ जी एक अच्छे कवि व लेखक थे। आप ने सुन्दर काव्य एवं समीक्षात्मक निबन्ध व लेखों का सृजन किया। हिन्दी के प्रमुख कवि, साहित्यकार एवं प्रकाशकों से आपके घनिष्ठ संबंध थे। प्रयाग से प्रकाशित आलोक पुस्तक माला के कई काव्य संकलनों का आपने कुशल संपादन किया। मैनपुरी में

साहित्यिक गतिविधियों के एकमात्र केन्द्र 'श्री माथुर चतुर्वेदी पुस्तकालय' के छोटे से भवन का प्रथम भव्य रूपान्तरण आपके ही अथक परिश्रम व कुशल प्रबंधन से संभव हुआ। विपन्न अवस्था को प्राप्त शहीदों के परिजनों की सहायता हेतु आप सदैव स्व. बनारसीदासजी चतुर्वेदी के साथ संलग्न रहे और उन्हें शासन से पेंशन प्रदान कराईं। क्रांतिकारी स्व. रामप्रसाद 'बिस्मिल' की बहन श्रीमती विद्यावती सदैव आपके प्रति कृतज्ञता का भाव रखती रहीं। कारण कि पाण्डेयजी ने अचानक उनके गांव उस समय पहुंच कर उनको संबल प्रदान किया जब वे दुखी होकर प्राणोत्सर्ग के लिये उद्यत थीं। बिस्मिल की प्रकाशित जीवनी की पुस्तक में उनकी बहन ने इस प्रकरण का स्वयं उल्लेख किया है।

प्रेमराजजी के अनुज चिंतामणिजी के एकमात्र पुत्र उमरावसिंहजी का जन्म भी सन् 1902 में हुआ। सभी भाइयों में इतना प्रेम-भाव था कि घर के बाहर प्रायः सभी मुहल्ले वाले उन्हें स्व. चम्पालाल जी - स्व. ओंकारनाथजी का सहोदर ही मानते थे। आप एक सफल कवि, लेखक व समाज सुधारक के रूप में विख्यात हुये। 'प्रेम-प्रसून' व 'भाव-साम्य' आपकी दो प्रकाशित कृतियाँ हैं। समाज के कई लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्तियों के 'जीवन-परिचय' के प्रकाशनों का आपने कुशल संपादन भी किया। उत्साही साथियों स्व. जय कृष्ण जी एवं स्व. अमरनाथ जी (भय्ये चाचा) के साथ मिलकर सन् 1918 में आपने मैनपुरी में ''श्री माथुर चतुर्वेदी पुस्तकालय' की स्थापना की। प्रगति के पथ पर निरन्तर अग्रसर यह पुस्तकालय 5 वर्ष बाद ही अपनी जन्मशती मनाने वाला है। पुस्तकालय में 'बंसत-पंचमी' व 'तुलसी-जयंती' पर साहित्यिक उत्सव आपने बड़े धूम-धाम से प्रारम्भ कराये। मद्यनिषेध पर रचित आपके काव्य को उ.प्र. सरकार ने प्रकाशित कर निःशुल्क वितरित कराया। हिन्दी के प्रचार-प्रसार और समाज सुधार हेतु ही आपने अपना पूरा जीवन व्यतीत किया। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' व अन्य श्रेष्ठ कवि व साहित्यकारों को आप मैनपुरी लाने में सफल रहे और कई कवि-सम्मेलन व साहित्य-सम्मेलन आपने मैनपुरी में सम्पन्न कराये।

अपने भाइयों में सबसे छोटे और लाड़ले रूपकिशोरजी का जन्म प्रेमराजजी के चतुर्थ पुत्र के रूप में सन् 1911 में हुआ। परिवार के परिवेश

का उन पर पूर्ण प्रभाव था। रसखान, घनानंद व रत्नाकरजी आदि के सरस छंदो के सस्वर पाठ में वे निरंतर निमग्न रहते थे। होली गायन में भी वे बड़े उत्साह के साथ भाग लेते थे। हनुमान जी के परम उपासक थे। हनुमान-जयंती का उत्सव वे धूम-धाम से गायन-वादन के साथ संपन्न कराते थे। अपने बड़े भाइयों की सेवा लक्ष्मण की तरह करने और उनके इच्छित कार्यों को येन-केन प्रकारेण सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने में ही वे परमानन्द का अनुभव करते थे। घर हो या मुहल्ला, किसी भी आयोजन में उनके पहुँचते ही बाल और वृद्ध सभी मैं उत्साह और उमंग की एक अद्‌भुत लहर दौड़ जाती थी और एक स्वस्फूर्त आनन्दमय वातावरण व्याप्त हो जाता था। आप स्वभाव से परम दयालु-परम कृपालु और परम धार्मिक थे। गौसेवा में उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन व्यतीत किया। सैकड़ों गायें उन्होंने कसाइयों के हाथों से छुड़ा कर दान करदीं। घर-मुहल्ले के बालवृन्द उन्हें 'गैया बाबा' के नाम से पुकारते थे।

सन् 1918 में जन्में स्व. जगदीशप्रसादजी चम्पालालजी की एकमात्र संतान थे। आपको बांसुरी, हारमोनियम व बेंजो बजाने का बहुत शौक था। गाते भी अच्छा थे। समय मिलते ही घर में संगीत साधना का कार्यक्रम प्रायः नित्य ही होता था। होली एवं होली गायन के उत्सवों में उत्साह और उमंग के साथ भाग लेते थे। वृद्धावस्था में भी बाँसुरी वे बहुत अच्छी बजाते थे। वे बहुत ही सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। सीधी-सादी सपाट बात करते थे। जमाने के छल-कपट और प्रपंचों से पूरी तरह निर्लिप्त थे। सहन-शीलता की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने सदैव ध्यान रखा कि उनके बच्चे समाज में खूब घुलें-मिलें लेकिन उसमें व्याप्त भांग और जुए के व्यसन से अलिप्त रहें।

सन् 1929 में जन्में स्व. महेन्द्र नाथ जी, ओंकारनाथ जी के एकमात्र पुत्र थे। हँसी मजाक कर सदैव सबको हँसाते और गुदगुदाते रहते थे और स्वंय भी प्रसन्न रहने का प्रयास करते थे। घर के बालक-बालिकाओं को घेर-बटोर कर उनसे ज्ञानवर्धक व मनोरंजक वार्तालाप करते रहना उनका स्वभाव था। जल्दी सोना, जल्दी उठना और प्रातः नित्य भ्रमण को जाना उनका अटल नियम था। पुस्तकालय या विद्यालयों में आयोजित होने वाली अंताक्षरी व वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिये घर के बालकों को सदैव

प्रोत्साहित करते थे। उसकी तैयारी भी कराते थे। और जब कोई बालक कोई प्रतियोगिता जीतकर पारितोषक प्राप्त करता तो वे स्वयं भी बहुत प्रसन्न होते।

इस सकंलन को अपने परिवार के पूर्वजों को समर्पित करने के पुण्य अवसर पर हम मुहल्ले व समाज के विख्यात दिवंगत साहित्य व संगीत के उपासकों का भी पावन-स्मरण करते हैं जिनकी प्रेममयी छवि आज भी आँखों में समोई हुयी है। हम सादर नमन करते हैं अविस्मरणीय बिहारी बाबा, त्रिभुवननाथजी (मुनमुनिया चाचा), गुन्नामलजी, जुगले चाचा, दद्दा प्यारेलालजी, पुरुषोत्तमजी, विशम्भर कक्का, छोटेलालजी, टीकारामजी, सुरेशू दादा, प्रकाशचंद्रजी, नवलकिशोरजी (बिटऊ भा.सा.), बृजेन्द्रनाथजी मिश्र, नरेन्द्रनाथजी, दिनेशचंद्रजी (इंजी.), बच्चूजी, नरेन्द्र दद्दा, मुरली भा.सा. व रूप किशोरजी (हारमोनियम वाले) व भूपेन्द्रनाथजी (तबला सम्राट) आदि आदि को जो अपने व्यक्तित्व व कृत्तित्व रूपी संजीवनी से समाज को सदैव अनुप्राणित किये रहे।

अंत में, ज्ञान और पाँडित्य की नगरी काशी के रसिक कवि भारतेन्दु हरिश्चंद्र के शब्दों में प्रेम और भक्ति स्वरूपा पतित-पावनी बृज-भूमि को होली की शुभ कामनाओं के साथ पूर्वजों से अर्जित होली के पद, दोहे, कवित्त और सवैयों का यह सरस संग्रह पूर्वजों को ही समर्पित है-

नित-नित होरी बृज में रहो।
बिहरत हरि संग, बृजजुवती गन, सदा अनंद लहो।
प्रफुलित-फलित रहो बृन्दावन, मधुप कृष्ण गुन कहो।
'हरीचंद' नित सरस सुधामय, प्रेम प्रवाह बहो।।

भवदीय

विष्णुस्वरूप पाण्डेय, मिथलेशकुमार पाण्डेय, हरस्वरूप पाण्डेय

एवं

समस्त पाण्डेय परिवार, प्रेमसदन, 185 मिश्राना, मैनपुरी, उ.प्र.

होली आई

बाजैं डफ, ढोल बाजैं, फागु के समाज साजैं,
ग्वालन के झुंड लै गोविंद फौज जोरी है।
बाधैं सिर चीरा, हीरा झलकै कलंगिन में,
अंगन तरंग रंग भूषन करोरी है।।
केसरिया बागे, अनुराग-प्रेम पागे, मन-
माखन सभागे फहरात पट-छोरी है।
लीन्हैं भरि झोरी, पिचकारी रंग बोरी,
आजु होरी, आजु होरी, बरसाने आजु होरी है।।1।।

आज नँद जू कें आनंद भरे खेलैं फाग,
कोटि चंद ते दुचंद, भाल-दुति लाल की।
आभरन हीरन पै मानिक-ललाई आई,
तैसी छबि छाई है बिसाल बनमाल की।।
अबिर उड़ावैं, मुठि-मूठि सी चलावै, सखी-
देखिऐ लुनाई, नटनागर गोपाल की।
सजे पीत पट पर, मुरली-लकुट पर,
मोर के मुकुट पर, गरद गुलाल की।।2।।

गरजै डफ-झाँझ सु झिल्लिन के गन, बादर लाल गुलाल की झोरी।
बहु बुंदन की पिचकारिन सों, भिजवै हटि कें हरि पीत पिछौरी।।
कल कूजित कोकिल-चातक के गन, गाय रिझावत फाग गनोरी।
सजि कुंजन में मनमोहन सों, जनु पावस पीतम खेलत होरी।।3।।

बन-बन बानिक में बरन-बरन फूले,
'लोकनाथ' ललित लतान छवि छाई है।
मंजु-मजुं मंजरीन गुंजत मधुप-पुंज,
कुंजन में कोकिला की कूकन सुहाई है।।
होरी-होरी करत किसोरी दौरि खोरी-खोरी,
गोरी चलु तहाँ, जहाँ बल सुखदाई है।
लटकि-लटकि कान्ह बाँसुरी बजावत है,
ए री चलि देखिऐ, बसंत रितु आई है।।4।।

फूलि रही सरसों चहुँ ओर, जो सौने के बेस बिछायत साँचैं
चीर सजे नर-नारिन पीत, बढ़ी रस-रीति, बरंगना नाँचैं।।
त्यों 'कवि ग्वाल' रसाल के बौरन, भोंरन-झोंरन ऊधम माँचैं।
काम गुरू भयौ, फाग सुरू भयौ, खेलिऐ आजु बसंत की पाँचैं।।5।।

ठौर-ठौर चाँचर, चुहुल मची चंगन की,
अंगन की औरै दसा, औरै रूप छायौ है।
आनँद उरन अति, अमित अखंड छायौ,
नागर मिलन दिन दाब दरसायौ है।।
लाज औ रूखाइयत, संग लै विवेक पति,
भज्यौ ब्रज में तें मार बानन दबायौ है।
प्रौढ़ी प्रीति जागन, नवल नेह लागन कों,
फागुन सनेहिन के भागन तैं आयौ है।।6।।

छाई छबि हीरन की, रति जोति जीरन की,
'राजाराम' चीरन की चिलकारी अलकैं।
अबला अहीरन की पाली दधि छीरन की,
सोने से सरीरन की गारी दैदै बलकैं।।
पिचकारी नीरन की, मार सम तीरन की,
देव दान चीरन की मांगिबे को ललकै।
सौहैं करैं बीरन की, उड़नि अबीरन की
मुख लाली बीरन की बीरन की झलकै।।7।।

बहुत दिनान में बिदेस तें सुआए मेरे,
प्यारे मनमोहन बधाएं सब गाओरी।
नाचो रसराचौ नीकी नीकी गति लैलै करि,
नीकी नीकी भांतिन सों भावनि बताओरी।।
ताल कठताल औ तमूरा मुरचंगन सौं,
घुंघुरू बजाय कै मृदंग सौं मिलाओ री।
नन्द के कुंवर रिझवार कों रिझाओ आज,
सकल समाज करि रंग बरसाओरी।।8।।

अनुराग की होली

खेलि कै होरी गए जमुना तट, सोहत बाग तहां सुखकारी।
धाम महा अभिराम बने, तिन ओर तैं दीठि टरै नहिं टारी।।
रंग भरे अनुराग भरे, छवि दम्पति की मनमोहन वारी।
बासर रैनि बिहार करैं, नित कुंजन मैं बसि कुंज बिहारी।।9।।

मूठि गुलाल लै, आलिन तें कढ़ि, साँवरे पै चली गोप-किसोरी।
त्यों नँदनंदन हू उत धाय, महा सुख छाय, लई कर रोरी।।
होत जुरा-जुरी ही उमड़े दोऊ, खेलैं अनूपम प्रेम की होरी।
हाथ दुहूँ के उठाए उठैं न, रहे लिखे चित्र से नैनन जोरी।।10।।

एक संग धाए नंदलाल औ गुलाल दोऊ,
दृगन गए जे भरि, आनँद मढ़ै नहीं।
धोय-धोय हारी 'पदमाकर' तिहारी सौंह,
अब तो उपाय एकौ चित्त में चढ़ै नहीं।
कहा करौं, कहाँ जाउँ, कासौं कहौं, कौन सुनैं,
कौऊ तौ निकारो, तातें दरद बढ़ै नहीं।।
ऐरी मेरी बीर, जैसै-तैसे इन आँखिन तें-
कढ़िगौ अबीर , पै अहीर कौ कढ़ै नहीं।।11।।

या अनुराग की फागु लखो, जहाँ रागती राग किसोर-किसोरी।
त्यों 'पदमाकर' घाली घली, फिर लाल ही लाल गुलाल की झोरी।।
जैसी की तैसी रही पिचकी कर, काहू न केसर-रंग में बोरी।
गोरी के रंग में भीजिगौ साँवरौ, साँवरे के रँग में भींजिगी गोरी।।12।।

खेलत खिलार गुन-आगर उदार राधा,
नागरि छबीली फाग-राग सरसात है।
भाग भरे भाँवते सों, औसर फव्यौ है आनि,
'आनंद के घन' की घमंड दरसात है।।
औचक निसंक अंक चोंप खेल धूँधरि में,
सखीन त्यों सैनन ही चैनन सिहात है।
टेसू रंग ढोरि गोरे कर स्यामसुदंर कों,
गोरी स्याम रंग बीचि बूड़ि-बूड़ि जात है।।13।।

राधा नवेली सहेली समाज में, होरी कौ साज सजें अति सोहै।
मोहन छैल खिलार तहाँ रस-प्यास भरी अँखियान सों जोहै।।
डीठि मिलें, मुरि पीठि दई, हिय-हेत की बात सकै कहि कोहै।
सैनन ही बरस्यौ 'घनआनँद', भीजनि पै रँग-रीझनि मोहै।।14।।

खेलति फाग सोहाग भरी, वृषभान लली भली भांति उमङ्ग सौं।
घूंघट ओट किये 'रघुनाथ', गई हरि पै छकि छूटिकै संग सौं।।
चौकि तिरीछी चितै मुसकाय, फिरी पिचकारी लगायकै अंग सौं।
रीझि रहे वह भाव चितै, अरु भीजि रहे वा रंगीली के रङ्ग सौं।।15।।

आजु की बात कहा कहि हौं, मुखसों कछु हू कहि जात न प्यारी।
साध सबै मन की मन ही रही, ऐसी कछू बिधि बात बिगारी।।
'अंबिकादत्त जू' जादू करयौ, जनु मैं अपनी सुधि हाय बिसारी।
देखत ही मनमोहन कौ मुख, हाथ सों छूटि परी पिचकारी।।16।।

राग की होली

खेलो मिलि होरी, घोरो केसर-कमोरी, फेंको-
भरि-भरि झोरी, लाज जिय में बिचारो ना।
डारो बहु रंग, संग चंगऊ बजावो, गावो,
सबहिं रिझावो, सरसावो संक धारो ना।।
जोरि कर कहति निहोर 'हरिचंद' प्यारे,
मेरी बिनती है एक, ताहि तुम टारो ना।
नैन है चकोर, मुख चंद सों परैगी ओट,
यातें इन आँखिन गुलाल लाल डारो ना।।17।।

खेलिऐ फागु, निसंक ह्वै आजु, मयंकमुखी बड़ भाग हमारो।
ल`हु गुलाल दोऊ कर में, पिचकारिन रंग हिए मँहिं मारो।।
भावै तुम्हैं सो करो मोहिं लाल, पै पाँउ परौं, जिन घूँघट टारो।
'वीर' की सों, हम देखि हैं कैसै, अबीर तो आँख बचाय कै डारौ।।18।।

फागु के भीर अभीरन तैं गहि , गोविंदै लै गई भीतर गोरी।
भाय करी मन की 'पद्माकर', ऊपर नाय अबीर की झोरी।।
छीन पितंबर कंमर ते, सु बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।
नैन नचाइ, कह्यौ मुसक्याइ, लला! फिर खेलन आइयो होरी।।19।।

बातैं लगाय, सखान तें न्यारौ कै, आजु गह्यौ बृषभान-किसोरी।
केसर सों तन मंजन कै दियौ अंजन आँखिन में बरजोरी।।
हे 'रघुनाथ' कहा कहौं कौतुक, प्यारे गोपालै बनाय कै गोरी।
छाँड़ि दियौ इतनौ कहि कै, बहुरौ इत आइयो खेलन होरी।।20।।

होरी में सांवरे को गहिकै, बरजोरी सखी तिय भेष बनाई।
भूषन भार संवारि भलैं, हरी कञ्चुकी झालरैं मोतिन छाई।।
मन्द हंस्यो 'लछिराम' तहीं, बलि घांघरे चूनर की रुचिराई।
काजर दै कही राधिका सों ''अवलोकिये! नन्द की छोहरी आई!''।।21।।

खेलत बिहारी अरु कीरति कुमारी फाग,
सो छबि निहारि 'लाल' तन मन वारे हैं।
संग गोपी ग्वाल अंग-अंग मैं अनंग रंग,
प्रेम औ उमंग भरे गारिहू उचारे हैं।।
आज बृज कुंकुम अबीर अरु केसर के,
केवड़ा गुलाबयुत बहत पनारे हैं।
उड़त गुलाल मध्य बुक्काहू निहारे न्यारे,
तारे आसमान के गुलाबी रंग धारे हैं।।22।।

खेलत बिहारी अरु कीरति कुमारी फाग,
सो छबि निहारि 'लाल' तन मन वारे हैं।
संग गोपी ग्वाल अंग-अंग मैं अनंग रंग,
प्रेम औ उमंग भरे गारिहू उचारे हैं।।
आज बृज कुंकुम अबीर अरु केसर के,
केवड़ा गुलाबयुत बहत पनारे हैं।
उड़त गुलाल मध्य बुक्काहू निहारे न्यारे,
तारे आसमान के गुलाबी रंग धारे हैं।।22।।

बासन बगीचे सींचे अतर उलीचे कींचे,
अतर सुगन्धन के परत फुहारे हैं।।
राजत ह्रदेश फाग मत्त मनमोहन पै,
उड़त गुलाब जनु जलधर धारे हैं।।
बाल भाल मोतिन के माल पै गुलाल धूरि,
भाषत 'रसाल' छवि जाल चटकारे हैं।
मानो पंचबान के सिंगारे रूपधारे भारे,
तारे आसमान के गुलाबी रंग धरे हैं।।23।।

एक ओर सुन्दरी सखीन संग स्याम लसैं,
एक ओर ग्वालन पै प्यारे नन्दवारे हैं।
एक ओर बीथिन के बीच रंग कीच मचो,
एक ओर केसर के छूटत फुहारे हैं।।
एक ओर सोहत गवैयन की गौलैं आछी,
बाना डफ ढोल एक ओर धुधकारे हैं।
उड़त गुलाल नभ मण्डल भो लाल लाल,
तारे आसमान के गुलाबी रंग धारे हैं।।24।।

कोऊ ह्वै निसङ्क अङ्क लावैं नवनारिन को,
कोऊ बृजबारे पट घूंघट उघारे हैं।
कोऊ पिचकारैं मारैं स्वांगहू संवारैं कोऊ,
द्वार द्वार दौरि दौरि फाग ललकारे हैं।।
केसर कुसुम अरु केवड़ा गुलाब वारे,
छूटत फुहारे लाल धारे नदी नारे हैं।
भरि भरि पर्बत औ बन उपबन सारे,
तारे आसमान के गुलाबी रंग धारे है।।25।।

खेलत फाग लख्यो पिय प्यारी को, ता सुख की उपमा किमि दीजै।
देखतही बनिआवै भलैं, रघुनाथ कहा है जो वारने कीजै।।
ज्यों-ज्यों छबीली छकै पिचकारी लै, एक लई यह दूसरी लीजै।
त्यों-त्यों छबीलौ छकै दबि छाक सों, हेरे हंसे न टरै खरो भीजै।।26।।

एकनि सों दृग मों दृग जोरिकै, सैननि एकनि दीठि मिलावै।
एकनि रङ्ग भिजाइ रिझाइके, एकनि गेंद चलाय हिलावे।।
माखन एकै गुलाल की गुङ्ग में, व्याकुल कण्ड लगाय जिलावै।
होरी के ओसर नन्दकिशोर, सबै हुलसाय औ फाग खेलावै।।27।।

फाग मची बलबीर के द्वार, खरे फगुवार दोऊ दल वारें।
साजि सखी नटवा नटनागर, बाजे मृदङ्ग रबाब सितारैं।।
रंग सहाब अबीर भरे, छुटे कुंकुमा केसर की पिचकारैं।
केसरिया सरियां पहिरे, भलैं छोहरियां छरियां गहि मारैं।।28।।

मेलनि कंठ भुजानि दै खेलनि, झेलनि झोरि गुलाल उड़ावनि।
धूंधरि धूम धमारिन की धंसि, धावनि औ बल कै गहि लावनि।।
त्यों ललिते लपटानि सुबानि सों, तानि भरी पिचकीन चलावनि।
आजु लखी नंदद्वार सखी भली, राग भरी वह फाग की गावनि।।29।।

लाल भयो नभ देखि परै, सब मेघ समान गुलाल की छावनि।
ह्वै झरिसी रही केशरि नीर की, कीच मची महि बीच सुहावनि।।
त्यों ललिते चमकै चपला सम, बाल भरी मद मोद बढ़ावनि।
भाग भरी बृज देखौ सुनौ, सब राग भरी वह फाग की गावनि।।30।।

आई फाग खेलिकै सकेलि सुख सांवरे सों,
सुन्दरि सुघरि सी सनेह सरसावै है।
केसर के रंग भीजी चूनरी सुरंग रंग,
आनद अनङ्ग की तरङ्ग दरसावै है।।
राजत अनोखो आधो बदन गुलाल भरो,
कहत 'किशोर' सो अनूप छबि छावै है।
अमल अभङ्ग आछो युत उतसाह मानो,
अरुण घटा तैं ससि निकसत आवै है।।31।।

सराबोर चूनर सुरंगन मैं केसरि के,
रोम-रोम छवि की तरंग छलकत है।
कवि लछिराम ढारी सौरभ सवांरी प्यारी,
अनुराग वारी पै सोहाग ललकत है।।
खौर वारे भाल पर बंक नैन लाल पर,
बदन बहाल पै बिनोद बलकत है।
जुलफन जाल जेब चौलरे बिसाल पर,
ग्वाल बनमान पै गुलाल झलकत है।।32।।

मधुर मधुर मुख मुरली बजाइ धुनि,
धमकि धमारन की धाम धाम कै गयो।
कहै पदमाकर त्यों अगर अबीरन की,
करिकै घलाघली छलाछली चितै गयो।।
को है वह ग्वालिनि गुवालिनि के संग में,
अनंग छबिवारो रसरंग में भिजै गयो।
बै गयो सनेह फिर छ्वै गयो छरा को छोर,
फगुवा न दै गयो हमारो मन लै गयो।।33।।

फाग मचो सिगरे ब्रज में नभ, बादर लाल गुलाल से छाये।
नागरी औ मनमोहन नागर, सामने होत चितै मुसकाये।।
मान गयो छुटि मोद भयो मन, दोऊ सनेह भरे बतलाये।
मूठी अबीर चलाय सुगन्ध, लगावन के मिस सौं लपिटाये।।34।।

गावै राग बानी वर, मानों सुधा सानी,
सुनि मोहे सब ज्ञानी ध्यानी, ध्यानी अलसंत री।
केसर कुसंभ रंग कंचन के जंत्र भरे,
झोरी भरि रोरी औ गुलाल बरसंत री।।
चोबा और अतर-फुलेल के फुहारे चलैं,
मलै देव मीड़ैं मुख, सुर सोहसंत री।
'मनीराम' माघ सुदी पंचमी पियारे कान्ह,
सजि ब्रजराज आजु खेलत बसंत री।।35।।

फाग मची बरसाने के बाग में, पूर रह्यौ थल तान-तरंग सों।
गोप-बधू इत ठाड़ी, गोपाल उतै, 'रघुनाथ' बढ़े सब संगसों।।
घूँघट टारि, सखीन की ओट ह्वै, प्यारी चलाई जो प्रेम-उमंगसों।
लागी तौ मूठ अबीर की आय पै, प्यारौ अन्हाय गयौ वह रंगसों।।36।।

केसर की पिचका परि पूरन, पूर कपूर गुलाल कौ दौना।
आईं सबै ललना ललितादिक, खेलत फाग निकुंज के कौना।।
केसरिया पट में दृग पावै, गुलाल के त्रासन स्याम सलौना।
मानों कहूँ बिछुर्‌यौ निज साथ तें, सोंनजुही में छिप्यौ मृग-छौना।।37।।

घेरि लिए घनस्याम चहूँ दिसि, दामिनि सी मिली चेटक कै गई।
पीत पिछौरी रही कर खैचिं कै, बाँसुरिया हँसि छीनि कै लै गई।।
प्रेम के रंगन सों भरिकै, अरु फाग के रंगन मोहिनी वै गई।
केसर सों मुख मीड़ि गोपाल कौ, खंजन से दृग अंजन दै गई।।38।।

होरी कौ औसर हेरि लला, हरुए ढिंग आय गली में लई गहि।
री छरकायल छूटि गई, 'रघुनाथ' छबीले न फेरि सके लहि।।
रीझि औ खीझि दोऊ प्रकटीं, बृषभान-लली इमि दूर खरी रहि।
नैन नँचाय कछू कहिवे कों, पै चाह्यौ कह्यौ, नहिं आयौ कछू कहि।।39।।

फाग की रैन अँधेरी गलीन में, मेल भयौ सखि! सॉवरे जी कौ।
हौं धरि लीन अचानक दौरि, लगावन काज गुलाल कौ टीकौ।।
बानें गुलाल लगायौ अली जब, लीन्हों मुठी में अबीर सो नीकौ।
वस्त्रहुँ छाँड़ि कन्हैया गयौ, न भयौ, सखि! हाय मनोरथ जी कौ।।40।।

बैस नई, अनुराग मई, सु भई फिरै फागुन की मतवारी।
कौंवरे हाथ रचैं मिंहदी, डफ नीकैं बजाय रहैं हियरा री।।
साँवरे भौंर के भाय भरी, 'घनआनँद' सोंनि में दीसत न्यारी।
कान्ह है पोषत प्रान-पिये, मुख अंबुज च्वै मकरंद सी गारी।।41।।

रौक्यौ रहै अब क्यों करि कें, मिलि खेलन हौंस कौ ओज बढ्यौ है।
राख्यौ दुराव दुराय हिऐं, अनुराग सु बाहिर आनि कढ्यौ है।।
साँवरे छैल गरयारिनि गारिन, गायकें दोहरा एक पढ्यौ है।
चौंपनि चौगुनिऐ पुट लागि है, आजु तौ सौगुनौ रंग चढ्यौ है।।42।।

नौल बसंत उठैं अकुलाय, सुनैं कल कोकिल की किलकारी।
भाँवरै सी भरें साँवरे-साँवरी, होत निछावर ते सहचारी।।
'देव' दुहूँ कों दुहूँ दुरिकै रँग दै पठई, अँग-अँग उजारी।
केसरिया खुलै नंद किसोर, किसोरी कें केसर की रँगी सारी।।43।।

उततें कन्हाई लरिकाई के सखन लीन्हैं,
करि चतुराई केलि होरी की मचाई है।
इत वृषभान की कुमारी सुकुमारी प्यारी,
आली गन आली में रसाली सी सोहाई है।।
लालन गुलालन की लालन पै डारै मूठि,
चलैं पिचकारी, सुखकारी दुहुँ घाई है।
केसर के रंग साने, सुरंग नेह सरसाने,
मानों बरसा नें बरसाने झरि लाई है।।44।।

होरी-होरी करत अबीर भरि झोरी लीन्हैं,
खोरी-खोरी फिरैं ग्वाल-बाल समुदाई है।
तामैं नंदलाल लाल चीरा जरी धरैं, गरैं,
भावत विसाल बनमाल की सोहाई है।।
कीरति-किसोरी संग गोरी यूथ-यूथ मिलि,
भरी अनुराग फाग स्यामा सों मचाई है।
केसर के रंग साने, सुरंग नेह सरसाने,
मानों बरसा नें बरसाने झरि लाई हैं।।45।।

जुरि खेलैं तिया-हरि होरी, भलै, बहु मीन मृदंग बजैं रमकैं।
कर कुंकुम लै रँग कंजमुखी, पिय के मुख लावन कों झमकैं।।
तहँ लाल गुलाल के धूँधर में, बहु बालन की दुति यों दमकैं।
जनु सावन-साँझ ललाई के माँझ, चहुँ दिसि तें चपला चमकैं।।46।।

मोती कल गंग, नील सारी कालिंदी संग,
डर्‌यौ लाल रंग रूप भारती कौ भरिगौ।
'सेवक' भनत, कै हिए कौ अनुराग जागि,
उमँगि अदाग आज ऊपर उघरि गौ।।
लालकि लला नें मूँठि बादला की मारी, तापै–
सनख उरोज पर ऐसौ अनुसरिगौ।
मानों भानु पूर कला आपनी कों सूरमनि,
ह्वै कै चंद चूर चंदचूर पै बगरि गौ।।47।।

रोरी की झोरी भरैं ब्रज गोरी, सु खेलतीं होरी जहाँ छवि छाई।
आयौ तहाँ सुख सों सनि कै, वर बानक सों बनिकै ब्रजराई।।
जौलौं चलायौ चहै लखिकै, उन पै भरि मूठि चहूँकित धाई।
तौलौ कियौ सबकौ मुख लाल, गोपाल गुलाल बिना मुसकाई।।48।।

लाल की ललकि लखि, दौरि दुरिजात हुती,
छुवन न देत दबि तन दुति जाल की।
जाल की दरीचै ते निहारि मुरि जात हुती,
भाँति हुती मंदिर में दुति सों मसाल की।।
सील की न सुधिता कों आज, 'मनिदेव' कहै,
ह्वै गई बसन बारी मदन महाल की।
हाल की सुनो री चित्त चोरी करि दौरी,
वृषभान की किसोरी झोरी भरि कें गुलाल की।।49।।

गोरी बाल थोरी वैस, लाल पै गुलाल मूठि-
तानि कै चपल चली आनँद-उठान सों।
बाँए पानि घूँघट की गहनि चहनि ओट,
चोटन करति अति तीखे नैन-बान सों।।
कोटि दामिनीन के दलन दलि-मलि पाँय,
दाय जीत आई, झुंड मिली है सयान सों।
मीड़िवे के लेखे कर-मीड़िवौई हाथ लग्यौ,
सो न लगी हाथ, रहे सकुचि सखान सों।।50।।

खेलत फाग जू मेरी भटू, इनसों बड़े चाव तें बाबरी तैं हैं।
केसर के रंग की भरि सुंदरि, डारत कामरी पै पिचकै हैं।।
त्यों 'ब्रजचंद जू' साँबरे गातन, नावै सुगंधन की लपटैं हैं।
ये मँगुवा दधि-माखन के, ते कहो कहाँ ते फगुवा तोहि दै हैं।।51।।

होरी के दिवस कहूँ गोरी राधिका कों देखि,
कान्ह जिय माँझ यों विचार्यौ बुद्धि तीछे तें।
आज बिन रंग केहू छाँड़ि हौं न लाड़िली कों,
घातन में लाग्यो फिरौ आनँद के ईछे तें।।
कहै 'चिरंजीवि' त्योंही लला पिचकारी लैके,
लपक्यौ प्रिया पै, प्रिया भागी तकि तीछे तें।
ओढ़िनी सरकि, चोटी पीठ यों लखाति, मानों-
इंदु भाज्यो जात, औ फनिंद पर्‌यौ पीछे तें।।52।।

केसर सुरंग हू के रंग में रँगौगी आजु,
और गुरू लोगन की लाज कों पहेलिवौ।
गाइवौ-बजाइवौ जू, नाँचिवौ-नँचाइवौ जू,
रस वस ह्वैकै हम सब विधि झेलिवौ।।
'ठाकुर' कहत बाल, होनी तौ करौंगी सब,
एक अनहोनी कहौ कौन विधि ठेलिवौ।
घुँघुटा उठाइवो, गरे में भुजि मेलिवौ जू,
ऐसी होरी खेलिवौ जू, हम तौ न खेलिवौ।।53।।

फाग में, कि बाग में, कि भाग में रही है भरि,
राग में, कि लाग में, कि सोंहै खात झूठी में।
चोरी में, कि जोरी में, कि रोरी में, कि मोरी में,
कि झूमि झुकझोरी में किझोरिन की ऊठी में
'ग्वाल कवि' नैन में, कि सैंन में, कि बैन में,
कि रंग लैन-दैन में, कि ऊजरी अंगूठी में।
मूठी में, गुलाल में, कि ख्याल में तिहारे प्यारी,
का में भरी मोहिनी, सो भयौ लाल मूठी में।।54।।

खेलत फाग सुहाग भरी, अनुरागहिं लालन कों धरि कै।
मारत कुंकुम, केसर की पिचकारिन में रंग कों भरि कै।।
गेरत लाल गुलाल लली, मनमोहन मौज मिटा करि कै।
जात चली 'रसखान' अली, मद मस्त मनी मन कों हरि कै।।55।।

नंद के मंदिर जाउ सबै, दुलही घर राखि, मिलै फगुआ के।
होरी बढ़ावन कों घर के गए आए हैं भोर भए रतिया के।।
भीतर भौन के लाय धरौ, ये किबार उठाय न जाँय यहाँ के।
सासु के ये सुनि बैन विसाल, सो फूलि गए सब अंग तिया के।।56।।

खेलन फाग सबै निकसीं, अरु रंग गुलाल लिऐं भरि झोरी।
मूठि चलावत ग्वालिन पै, अरु स्यामल के मुख आवत रोरी।।
जबहीं हँसि हेरि गह्यौ अँचरा, परसाद सी प्रीति, गुलाल सी जोरी।
मोसें दुरैहौ कहा सजनी! निहुरे-निहुरें कहुँ ऊँट की चोरी।।57।।

आली ललितादि लै कै चलीं वृषभान सुता,
फाग की बहाली लाली यौवन नसा की सब।
तास बादलेन के झलाके झला झलकत,
चन्द्र के कला की चञ्चला की गति थाकी तब।।
'ग्वाल' कवि आईं नन्दगांव की डगर पर,
जगर मगर जोति जागी है मजा की जब।
फैल कौ बकैया आगे मिलिगो छबीलो छैल,
गैल रोकि ठाढ़ौ कहै सैल करौ ह्यां की अब।।58।।

सङ्ग सहेलिन के सुखमा भरी, आई इतै मिलि खेलन होरी।
दीठि लगाय भली विधि सों, बलि सांवरे ऊपर भौंह मरोरी।।
औचक सङ्ग सहेलिन लैं, 'लछिराम' चली करिबे बर जोरी।
मूठि गुलाल की ओरै भई, गई आपुहि केसरि रंग मैं बोरी।।59।।

इत उत धावैं दुहू ओरन सों छावैं सुख,
सुखमा बढ़ावैं करैं चित्तन की चोरियां।
चलैं पिचकारिन पै रङ्ग पिचकारी भरी,
अति रूचिकारी प्यारी होय रहीं होरियां।।
'गिरधरदास' धूम धुन्धर गुलालन की,
ग्वालन की गारी बृजवाल बरजोरियां।
झोरिन पै झोरी, झकझोरी झकझोरिन पै,
रोरिन पै रोरी औ कमोरीन पै कमोरिया।।60।।

रंगीली होली

मोहन औ मोहिनी नें फाग की मचाई लाग,
बाग में बजत बाजे, कौतुक विसाल है।
केसर के रंग बहैं छज्जन पै, छातन पै,
नारे पै, नदी पै औ निकास पै उछाल है।।
'ग्वाल-कवि' कुंकम की घालन रसालन पै,
तालन तमालन पै, फूटत उताल है।
गंजन गुलालन पै, लालन पै, ग्वालन पै,
बाल-बाल-बालन पै, घुमड़्यौ गुलाल है।।61।।

कीरति-किसोरी संग स्यामैं लखि भई भोरी,
होरी देखि आई आज प्यारे बलबीर की।
सारी, जरतारी की किनारी में गुलाल राजै,
तैसी छबि छाजै उत कास्मीरी चीर की।।
हरैं-हरैं आवैं, मंद-मंद सुर गावैं दोऊ,
मिलि मुसकावैं, दुति धावैरी सरीर की।
नैन कारे ओर पर, बरुनी की छोर पर,
भौंहन-मरोर पर, ओप है अबीर की।।62।।

लालहिं घेरि रही ललना, मनों हेम-लता लपटानि तमालहिं।
मालहिं टूटत जात न जानत, लूटत हैं रस-रासि रसालहिं।।
सालहिं सौतिन के उर में, चलरी उठि वेगि, दै ताल उतालहिं।
तालहिं देत उठी ततकाल, लगाय गुपाल के गाल गुलालहिं।।63।।

छलकी परै हैं नौल छबिका तरंगै,
अंग रंगदार ऊभस धमारि की बहाली पै।
'लछिराम' तरह त्रिभंग मंगलीक मुख,
माधुरी हसनि मञ्जु अधर की लाली पै।।
ख्यौर का समीरी चारु चम्पई बसन पर,
वारो तनमन तेरी चाल मतवाली पै।
रोरी भाल भूधन अबीरी बनमाल ग्वाल,
गरद गुलाल जादू जुलफन काली पै।।64।।

फागुन मैं बड़ भाग भरीन सों, मोहन गोकुल गांवं गली पर।
गावतीं गारी सबै बृजनारी, सु दीठि गई बृषभान लली पर।।
आनन डार्‌यो गुलाब को नीर, चुवै कुच पै चित रंङ्ग रली पर।
बूदें पियूषन की बरसैं, हरि इन्दु मनो अरविन्द कली पर।।65।।

धूम धाम स्याम संग ऊधम धमारि ऐसी,
भूले आसमान मैं गुमान भानु रथ के।
'लाछिराम' तैसे अलबेली के बदन पर,
खुलि गये ख्याल मैं तरंग प्रेम पथ के।।
गरद गुलालकन केसरि अबीर भरे,
सीतला के दागन संवारे गुन गथ के।
परम प्रबीने रचे रंग साजि मीने मानौ,
बिथुरे मुकर पै नगीने मनमथ के।।66।।
लै बलबीर अबीर की मूठ, दई अलबेली लली दृग टू पर।
त्यों बनमाली पे आली चलावति, लाली गुलाल की छ्वै रही भूपर।।
लै पिचकारी बिहारी तहां, अधिकारी करी बृज गोप बधू पर।
पीन पयोधर तैं उचटी, सु परी सब केसर लाल के ऊपर।।67।।

बड़ भाग सोहाग भरी पति सों, लहि फाग में रागन छायो करै।
'कवि लाल' गुलाल की धूंधरि मैं, चख चञ्चल चारु चलायो करै।।
उझकै झिझिकै झहराय झुकै, सखि मङ्गन को मन भायो करै।
छतिया पर रङ्ग परे ते तिया, रति रङ्ग तैं रङ्ग सवायो करै।।68।।

होरी के औसर गोरी की खोर में, सङ्ग सखान लै धूम मचाई।
सो सुनि भावती लाज तजी, सुधि भूली सबै चित चोर्‍यो कन्हाई।।
माखन किङ्किनी हार करै, उलटे बंद कंचुकी बांधत आई।
नूपुर की मुंदरी पहिरे, भले फागु के खेलन को इत आई।।69।।

दिन चारि को पाहुनो फागुन है, जिय की सब हौसैं निकारिलै री।
कसि कंचुकी पैन्हिकै चूनर लाल, सुमोतिन मांग संवारिलै री।।
नंदद्वार पै जाय उमंगन मों, मनभावन पै रंग डारिलै री।
चल्यो जायगो औसर देखत ही, बहती नदी पानि पखारिलै री।।70।।

एरी बलबीर के अहीरन की भौरन मैं,
सिमिटि सभीरन अबीर को हटा भई।
कहै 'पदमाकर' मनोज मन मौजन ही,
मैन के हटा में पुनि प्रेमकी पटा भई।।
नेही नन्दलाल के गुलाल की घलाघल में,
राजे त्यौं पसीज तन घन की घटा भई।
चोखे चख चोटनि चलाक चित्त चोरी भई,
लुटिगई लाज कुलकानि की कटा भई।।71।।

बसिगई कीधौं बरसाने की बधूटिन में,
फंसगई कीधौं फाग रंग मुद नारे में।
धसि गई कीधौं डूबि ऊधम धमारिन मैं,
उमासि गई धौं या गुलाल घन भारे में।।
कवि 'लछिराम' घेर घूंघट उठत कैधौं,
छलि गई छैल छबि जाल के पसारे में।
हेरि बृजराजै लाज बैरिन हमारी आजु,
बिछलि बही धौं कीच केसरि पनारे मैं।।72।।

बसन अबीरी खौर सघन पटीरी सीरी,
बिहंसनि चांदनी सरद लों मिलति जाति।
रंगदार भूपर तरंग गंगमाला सम,
समता बिचारि सारदाऊ पछिलति जाति।।
'लछिराम' चाल मतवाली राजहंसिनी लों,
मंगलीक मौज बनमाली की खिलति जाति।
बदन प्रभाली पर अधर गुलाली पर,
चिबुक बहाली पर बेसरि हिलति जाति।।73।।

बेसरि बहाली बर बदन अमन्द बीच,
मुकुत प्रभाली तैं लोनाई ललकति है।
कवि लछिराम लूटे आनंद उरोज बर,
छूटे बंक बार में लमाई बलकति है।।
जोबन तरंगन अनंग रंग संग चढ़ी,
लोचन मरोर में ललाई झलकति है।
अंगन सों अजब सुरंग साल चादर पै,
कुन्दन तबक लों गोराई झलकति है।।74।।

फागुन लाग्यौ सखी जब तें, तब तें ब्रजमंडल धूम मच्यौ है।
नारि नवेली बचै नहीं एक, विसेष इहैं सबै प्रेम अँच्यो है।।
साँझ-सकारे कही 'रसखान' सुरंग गुलाल लै खेल रच्यौ है।
को सजनी निलजी न भई, अरु कौन भटू जिहिं मान बच्यौ है।।75।।

खेलत सुफाग महाराज ब्रजराज आज,
नाचैं बार-अंगना सभा में छल छूटि-छूटि।
'सेवक' बखानै सुर सकल समाँ के मँचै,
महत मनोज के मजा की मौजि लूटि-लूटि।।
धूमि-धूमि तालसों, उझकि-झुकि झूमि-झूमि,
हाव-भाव भूमि लौं बताव तान जूटि-जूटि।
पूतरी सी, पातरी, नगी सी, पन्नगी सी, नरी,
किन्नरी सी, किन्नरी-परी सी, परै टूटि-टूटि।।76।।

चौरासी समान, कटि किंकिनी बिराजत है,
साँकर ज्यों पग जुग घुंघरू बनाई है।
दौरी वे सँभार, उर-अंचल उघरि गयौ,
उच्च कुच कुंभ, मनु चाचरि मचाई है।।
लालन गुपाल, घोरि केसर कौं रंग लाल,
भरि पिचकारी मुँह ओर कों चलाई है।
'सेनापति' धायौ मत्त काम कौ गयंद जानि,
चोप करि चंपैं, मानों चरखी छुटाई है।।77।।

पिय के अनुराग सुहाग भरी, रति हेरै न पावत रूप रफै।
रिझवारि महा रसरासि खिलार, सु गावत गारि बजाय डफै।।
अति ही सुकुमार उरोजन भार, भर मधुरी डग, लंक लफै।
लपटै 'घनआनँद' घायल ह्वै दृग पागल छवै गुजरी गुलफै।।78।।

नवल किसोरी भोरी केसर ते गोरी, छैल–
होरी में रही है मद जोबन के छकि कै।
चंपे कैसौ ओज, अति उन्नत उरोज पीन,
जाके बोझ खीन कटि जाति है लचकि कै।।
लाल है चलायौ, ललचाइ ललना कों देखि,
उघरारौ उर, उरबसी ओर तकि कै।
'सेनापति' सोभा कौ समूह कैसै कह्यौ जात,
रह्यौ है गुलाल अनुराग सौं झलकि कै।।79।।

केसर के हौजन पै मौज मची आनँद की,
दामिनी सी दमकत संग सुकुमारी की।
हँसन चलाइन, बचाइन अदाइन सों,
मुरन–दुरन कोर भीजी तनु सारी की।।
रसिक कुँवर जू के हाथन की लाघवता,
कहाँ लौं सराहों उतै खेलन खिलारी की।
जघन सघन कंद कुचन–कपोलन पै,
मन की भरन, तहाँ परन पिचकारी की।।80।।

आई खेलि होरी, कहूँ नवल किसोरी झोरी,
बोरी गई रंगन सुगंधन झकोरै है।
कहै 'पदमाकर' इकंत चलि चोकी चढ़ि,
हारन के बारन के बंद-फंद छौरै है।।
घाघरे की घूमनि, उरुन की दुबीचै पारि,
आँगी हू उतारि, सुकुमार मुख मोरै है।
दंतन अधर दाबि, दूनरि भई सी चाप,
चौवर-पचौवर कै चूनरि निचौरै है।।81।।

फागु खेल स्याम संग सदन सिधारी प्यारी,
राजै दुति दामिनी सी भामिनी भरी अनंग।
'कवि राव राना' बैठ रतन सिंहासन पै,
दर्प भरी दर्पन लै भूषन सँभारै अंग।।
चंद मुख चंदन तें चंद की कला सी खाति,
कंचन की झारिन में जल भरि लाई गंग।
कोमल कपोलन तें धोवती गुलाल-लाली,
त्यों-त्यों होत आली! अति गहब गुलाबी रंग।।82।।

खेलन कों होरी देव-दारा सी उतर आईं,
दीरघ दृगन देखि लगत नहिं पलकैं।
उड़त दुकूल, दरसात भुज-मूल वर,
उन्नत उरोज हार-हीरन के झलकैं।।
'बैनी कवि' भू पर धरत मंद-मंद पाँय,
आनन के ऊपर अनूप छवि छलकैं।
लाल-लाल रंग भरी, मदन-तरंग भरी,
बाल भरी आनँद, गुलाल भरी अलकैं।।83।।

होरी की बातन के चलतें, तुव बोलनि क्यों लरजाय गई।।
अंग लता तुव कंचन सी, किमि हाय रोमंचन छाय गई।।
'अंबिकादत्त' कों देखत ही, झुकि झाँकती क्यों सरमाय गई।
धूम धमारन की सुनतें अली, स्वेद के बिंदु नहाय गई।।84।।

फाग रच्यौ नँद-नंद प्रबीन, बजैं बहु बीन, मृदंग रबाबैं।
खेलतीं वे सुकमारि तिया, जिन भूषन हू की सही नहिं दाबैं।।
सेत अबीर के धूँधर में, इमि बालन की बिकसी मुख-आवैं।
चाँदनी में चहुँ ओर मनों, 'नृप संभु' बिराज रहीं महताबैं।।85।।

अँचरा उरोजन तें खुलि-खुलि जात प्यारी,
फैंकै पिचकारी भारी लागी रंग बरसात।
कहत न बनै न कुछ, देखत ही आवै बनि,
मैन-कामिनी सी दामिनी सी दुति दरसात।।
कुछ उचकौहैं, लचकौहैं मध्य देस बेस,
'बेनी कवि' आानन अनूप छबि सरसात।
छाय जात आनँद, लजाय जात गोरी सुनि,
चोट करि कान्ह पै, अली की ओट आइ जात।।86।।

मूठी गुलाल भरैं चली लाल के मारिवे कों मुख पै, सुख कों चहि।
'गोकुलनाथ' खिलार लई तब, लोइन हू भरि केसर सों लहि।।
जाय दई पहिलै कुच पै, पिचकारी की धार, निहारि कै हो कहि।
आँचर ओढ़ि, चितै सतराय, लजाय सखीन की ओट लई गहि।।87।।

बादले की ह्वै गई बसुधा, तिमि गाढ़ी गुलाल की ह्वै अँधियारी।
बाज रहे बहु बाजे सुहावन, ह्वै रही किंकिनी की झनकारी।।
देखौ परै नहिं नैनन सों, 'रघुराज' भयौ तहँ यों भ्रम भारी।
लालन धाय गहै लतिकान, तमालन धाय गहै ब्रज-नारी।।88।

हुरिहारी होरी

थोरी-थोरी बैस की अहीरन की छोरी संग,
भोरी-भोरी बातन उचारत गुमान की।
कहै 'रतनाकर' बजावत मृदंग-चंग,
अंगन उमंग भरी जोबन उठान की।
घाघरे की घूमनि समेटि कै कछोटी किऐं,
कटि-तट फेंटि कोछी कलित विधान की।
झोरी भरैं रोरी, घोरि केसर कमोरी भरैं,
होरी चली खेलन किसोरी वृषभान की।।89।।

आयौ जुरि उततें समूह हुरिहारन कौ,
खेलन कों होरी वृषभान की किसोरी सों।
कहै 'रतनाकर' त्यों इत ब्रजनारी सवै,
सुनि-सुनि गारी गुनि ठठकि ठगोरी सों।।
आँचर की ओट-ओटि चोट पिचकारिन की,
धाइ धँसी धूँधर मचाइ मंजु रोरी सों।
ग्वाल-बाल भागे उत, भभरि उताल इत,
आपै लाल गहरि गहाइ गयौ गोरी सों।।90।।

डरो ना अहीरन तें, अगर-अबीरन तें,
चार जनी चारु, चार ओरन तें धाओं री।
एक हाथ आड़ौ पिचकारी की अगारी मारि,
एक हाथ ओट राखि आँखिन बचाओ री।।
'कवि सरदार' आयौ बड़ौ खिलवार, ताहि-
खेल कौ सवाद रंग-रंगन बताओ री।
कीरति-कुमारी कह्यौ हेरि कै कुमारी कोउ,
ए री गुनवारी, बनबारी बाँधि लाओ री।।91।।

ठाढ़ी रहो, डगो न भगो, अब देखो जो है कछु खेलत ख्यालहिं।
गावन दै री, बजावन दै सखी, आवन दै इतैं नंद के लालहिं।।
'ठाकुर' हौं रँगिहौं रँगसों अंग, ओड़ि हौं बीर! गुलालहिं।
घूंधर में, धधकी में, धमार में, धसि हौं अरु धरि लैहौं गोपालहिं।।92।।

प्रात झुकाझुकी भेष छुपाय कै, लै गगरी जल कों डगरी ती।
जानी गई न कितेकऊ बार तें, आन जुरे, जहाँ होरी धरी ती।।
'ठाकुर' दौरि परे मोहिं देखत, भाग बची सु कछू सुघरी ती।
बीर! जो दौरि किवार न देउँ री, तौ हुरिहारन हाथ परी ती।।93।।

लै-लै कर झोरी जुरि आईं इतै गोरी,
उतै होरी खेलिवे कों लाल जाल हू बनायौ कीच।।
छाइगौ छिनै में यों गुलाल मेघ-माल ऐसौ,
'द्विजदेव' जासों ना जनायौ परें ऊँच-नीच।।
ऐसी भई धूँधरि धँमारि की सु ताही समैं,
पावस के भोरैं मोर सोर के उठे अपीच।
घन के समान ज्यों-ज्यों दौरैं घनस्याम, त्यों-त्यों-
संपा सी दुरति आली, चंपा-घन-बन बीच।।94।।

दुहुँ ओर सों फागु-मढ़ी उमड़ी, जहाँ श्री-चढ़ी भीर तें भीर भिरी।
धधकी दै गुलाल की धूँधरि में, धरी गोरी लला मुख-मींड़ि सिरी।।
कुच कंचुकी कोर छुवै छरकै, 'पजनेस' फँदी फरकै ज्यों चिरी।
झरपै, झँपै, कौंधै, कढ़ै तड़िता, तड़पै मनों लाल घटा में घिरी।।95।।

आली हौं गई हौं आज भूलि बरसाने कहूँ,
तापै तू परै है पदमाकर तनैनी क्यों।
ब्रजबनिता पै बनितान पै रचैहैं फाग,
तिन में जु ऊधमिनि राधा मृगनैनी यौं।।
घोरि डारी केसरि सु बेसरि बिलोरि डारी,
बोरि डारी चूनरि चुचाति रंग नैनी ज्यों
मोहिं झकझोरि डारी कंचुकी मरोरि डारी
तोरि डारी कसन बिथोरि डारी बेनी त्यों।।96।।

जान नहि देत गैल, रोकि-रोकि आली आजु,
नन्द को किशोर करे अजब ठिठोली री।
बाजत चहूंधा झाँझ ढप औ मृदंग धुनि,
तानें मिलि गावै सब सखा हम जोरी री।
'बद्रीनाथ' उड़त अबीर आजु बृज माहिं,
मार्‌यो पिचकारी जासों भींजि गई चोली री।
कहा कहों आली, बनमाली की कुचाल देखो,
चूमि-चूमि मोसों कहे आजु होरी-होरी री।।97।।
आजु बृज खोरिन मैं गोरिन समेत राधे,

अतर सुगन्धन तरङ्गन सों फसि फसि।
फाग रचि धूंधुरि धमारिन की तारिन दै,
रंग पिचकारिन सौं गारिन सों गंसि गंसि।।
'लालजी' कहत त्यों गुलाल की चला चली मैं,
भृकुटी सिकोरि सुखमोरि कियो बसि बसि।
दैगई चखनि चोट जहर बुझी सही हाय!
चेटक सो कैगई कका की सौंह हंसि हंसि।।98।।

झेला झेल झोरिन की मूठिन की मेला मैल,
रेला रेल रंग की उमंग सरसतु है।
कहैं 'पद्माकर' गवैयन की ऐल परी,
गैल-गैल फैल-फैल फाग परसतु है।।
घूम धधकौअन की धधकी बजति तामें,
ऐसो अति ऊधम अनोखे दरसतुहै।
ग्वाल पर ग्वाल, तिहि ग्वाल पर नन्दलाल,
लाल नन्दलाल पै गुलाल बरसतु है।।99।।

धूमन पै धूम औ धमार पै धमार,
सरदार धधकी पे धधकी त्यों बीज ब्वै रही।
चाहन पै चाह औ उछाहन पै उछाह,
नेह नेह पै निवाह बांह बांहन बिम्वै रही।।
मूठिन पै मूठि, मेल दीठिन पै दीठि,
रंग रंग पै उमङ्ग लै सुरंग भूमि ज्वै रही।
गारिन पै गारी, पिचकारी पिचकारिन पै,
तारिन पै तारी दै दुलारी फाग ह्वै रही।।100।।

सांकरी गैल में संग सखा लये, डारत केसरि रंग अपार हौ।
चन्दन धरु सुगन्ध लगावत, सींचत गात गुलाब बहार हौ।।
'लालजी' औचक चोट न जानत, गाल मैं देत गुलाल की मार हौ।
सौहैं न मानौ हहा किये सों! हरि! कैसे दई न नोखे खेलार हो।।101।।

सांकरी वै बृज खोरिन मैं, अति गोरिन मैं सजि औचक आयकै।
चारु सुगन्ध उमंगन सों छकि, मंजुल केसरि रंग चलायकै।।
'लालजी' धूम धमारिन की करि, तारिन दै हँसि गारिन गायकै।
लाल के गाल में लाड़िली आजु, गई गुलचा दै गुलाल लगाय कै।।102।।

फाग में राग भरे सिगरे, रहे धूम धमारिन की सरसायकै।
त्यों ललिते बृषभन लली, तहँ आई अलीन ले मोद बढ़ाय कै।
चीरिकै भीर अहीरन की, सुधरी धंसि गोबिंद को हिय लायकै।
केसरि के रंग सों रंगिकै, गुलचा दियो गाल गुलाल लगाय कै।।103।।

चोवा चारु चन्दन चहल चोट बन्दन की,
चालैं लगीं सही नन्दनदन अगारी तैं।
आईं बृजबारी सुकुमारी जे दुलारी तिन्है,
करत सुमारी गाय गारी पिचकारी तैं।
तब सरदार मूठ मूठ सी सिहारी राधे,
संग दृगबान मारी लगत लचारी तैं।
ज्योईं बनवारी भयो गाफिल गरीब त्योंईं,
बढ़ि बृजनारी लियो पकरि पछारी तैं।।104।।

बृन्दाबन चन्द अहो आनंद के कन्द तुम,
माधव मुकुन्द हो अनन्द छबि जोरी के।
नन्द जू के नन्द बलदेव के सहोदर,
सखान में सराहे घनस्याम मति भोरी के।।
फागुन के औसर फजीहत बजाय ढोल,
कहत कहाए बृषभान की किशोरी के।
गाइन के रहुवा गुलाम बृज गोपिन के,
हो हो! हरि भड्डुआ! हजार दार होरी के।।105।।

गैल में गाय कै गारी दई, फिरि तारी दई औ दई पिचकारी।
त्यों 'पदमाकर' मेलि मुठी, इत पाय अकेली करी मन वारी।।
सौहैं बबा की करेहूं कहों, यहि फाग को लेहुंगी दांव निकारी।
का-कबहूं मझिआइहो ना, तुम नन्दकिशोर वा खोर हमारी।।106।।

फाग मची में नचावत कान्हरै, आपुनहू गति मन्द चलै लगीं।
नाचती गावती दै चुटकी, चहुंओर कपोतसी ग्रीव हलै लगीं।।
भाव के भेदन ही सो भुलायकै, आयकै कोऊ गुपाल गरै लगीं।
हाल दै ओर निहाल ह्वै ग्वालिनी, लाल के गाल गुलाल मलै लगीं।।107।।

गोकुल की गली गाई धमारि मैं, सांवरो दोरि सनेहन जोर्‌यो।
खोलिकै घूंघट के पट को, 'लछिराम' गरो गहि के झकझोर्‌यो।।
हाय हमारो भयो गुण दोष, यौं चौलरो हीरन को हंसि तोर्‌यो।
बोरिकै केसरि के रंग मैं, बर बेसरि मोती मरोरि बिथोर्‌यो।।108।।

फहर भई धौं फबे रंग के फुहारन में,
कैधौं तराबोर भई अतर अपीच में।
कहै पदमाकर चुभी धौं चारु चोवन में
उलचि गई धौं कहूं अगर उलीच में।।
हाय इन नैनन तैं निकरि हमारी लाज,
कित धौं हेरानी होरिहारन के बीच में
उलझि गई धौं कहूं उड़त अबीर रङ्ग,
कचरि गई धौं कहूं केसरि की कीच में।।109।।

नीर में अबीरन के बसन सुरङ्ग सोने,
भीर मो भरमि कै लकीर सो खचैगयो।
लंक मो लपटि बंक बारन बिथोरि बेस,
बेसरि मरोरि मलि बदन बचै गयौ।।
कवि 'लछिराम' या कलंक बिस घोरि बोरि,
मरम जहाज लाज लंगर लचै गयो।
लोचन गुलाली बनमाली यौं हमारी खोरि,
आली अबै ऊधम धमारि को मचै गयो।।110।।

होरी सी होरी

अवधि बिताई एती करी निठुराई पिय,
पाती न पठाई गनौं राजन जरोरी मैं।
ऋतुपति आई पाती अति ही सोहाई फिरी,
काम की दुहाई दुख दारुन दरोरी मैं।
फूलै हैं पलास औ हुलास सब बालन के,
अंग अंग अतर अबीर भरे झोरी मैं।
मदन बढ़ो री प्रान चाहत कढ़ो री सखी,
और खेलैं होरी हम होरी होत होरी मैं।।111।।

पीरी परी देह छीनी, राजत सनेह भीनी,
कीनी है अनंग अंग-अंग रंग बोरी सी।
नैन पिचकारी ज्यों चल्यौई करै रैन-दिन,
बगराए बारन फिरत झकझोरी सी।।
कहाँ लौं बखानों 'घनआनँद' दुहेली दसा,
फाग मयी भई जान प्यारी वह भोरी सी।
तिहारे निहारे बिन, प्रानन करत होरा,
विरह अँगारन मगरि हिय होरी सी।।112।।

कुमकुम चीर रँग्यौ-उँमगयौ, पिचकारिन भरि-भरि खेलत होरी।
अबीर गुलाल की धुंधि उड़ै, मानों रंग भरी रस में सरबोरी।।
फागुन के दिन स्याम बिना, अब कैसै जिएं वृषभान-किसोरी।
व्याकुल बाल धरै नहीं धीर, इतै जरै आप, उतै जरै होरी।113।।

घन नव बीथन तें घर-घर घेरि रहे,
लाल पीरे लागत न जानि परैं कारे से।
गावत समाज, करे आवत न बाज राज,
करो ये निलज्ज छके छाक मतवारे से।।
'गोकुल' बसंत में वियोगिनी के जारिवे कों
होरी सी हिए में हरषित निरधारे से।
भीजे मकरंद, सो पराग लपटाने देखो,
मधुकर डोलत फिरत फगुहारे से।।114।।

कहाँ एतौ पानिप बिचारी पिचकारी धरै,
आँसू नदी नैनन उमँगिऐ रहति है।
कहाँ ऐसी राँचनि हरद-केसू-केसर में,
जैसी पियराई गात पगिऐ रहति है।।
चाँचरि-चौपही हू तौ औसर ही माचति, पै-
चिंता की चहल चित लगिऐ रहति है।
तपनि बुझे बिन 'आनंदघन' जान बिन,
होरी सी हमारे हिए लगिऐ रहति है।।115।।

सौंधे की बास उसासहिं रोकत, चंदन दाहक गाहक जी कौ।
नैनन बैरी सो है री गुलाल, अबीर उड़ावत धीरज ही कौ।।
राग विराग, धमार त्यों धार सी, लौटि पर्‌यौ ढँग यों सब ही कौ।
रंग रचावन जान बिना, 'घनआनँद' लागत फागुन फीकौ।।116।।

'घनआनँद' प्यारे कहा जिय जारत, छैल ह्वै फीकिऐ खौरन सों।
करि प्रीति पतंग कौ रंग दिना दस, दीसि परै सब ठौरन सों।।
ये औसर फागु कौ नीकौ फब्यौ, गिरधारहिं लै कहूँ टौरन सों।
मन चाहत है मिलि खेलन कों, तुम खेलत हौ मिलि औरन सों।।117।।

दसन बसन बोली भरि ए रहे गुलाल,
हँसनि लसनि त्यों कपूर सरस्यौ करै।
साँसन सुगंध सौंधे कोरिक समोय धरे,
अंग-अंग रूप-रंग रस बरस्यौ करै।।
जान प्यारी तो तन 'अनंदघन' हित नित,
अमित सुहाय राग फाग दरस्यौ करै।
इते पै नवेली लाज अरस्यौ करै, जु प्यारौ-
मन फगुवा दै, गारी हू कों तरस्यौ करै।।118।।

तब न सिधारी साथ, मीड़त है अब हाथ,
'सेनापति' जदुनाथ बिना दुख ए सहैं।
चलैं मनरंजन के, अंजन की भूली सुधि,
मंजन की कहा, उनहीं के गूँथे केस हैं।।
बिछुरैं गुपाल, लागै फागुन कराल, तातें-
भई है बेहाल, अति मैले तन भेस हैं।
फूल्यौ है रसाल, सो तौ भयौ उर साल,
सखी डार न गुलाल, प्यारे लाल परदेस हैं।।119।।

फागुन महीना की कही ना परैं बातें,
दिन-रात जैसै बीतें, सुनैं डफ-घोर कों।
कोऊ उठै तान गाय, प्रान बान पैठि जाय-
चित्त बीच, एरी पै न पाऊँ चित-चोर कों।।
मची है चुहल, चहुँ ओर चोंप चाँचरि सों,
कासों कहौं, सहौं हौं वियोग-झकझोर कों।
मेरौ मन आली वा बिसासी बनमाली बिन,
बावरे लौं दौरि-दौरि परै सब ओर कों।।120।।

होली के चौबोला छंद

भयो धुंध ऊपर गुलाल को, नभ मण्डल लों परसै।
मूंदत भान बिमान बितानन, दसहु दिसानन दरसै।।121।।

बहुरि कनक पिचकारिन तैं, जब उड़त सुरंग फुहारे।
तब मिटिजात गुलाल धुंध, नभ प्रगटत रंग पनारे।।122।।

अधिक कहूं रोरी की घोरी, अरुन धार प्रगटानी।
सोहति मनहुं भारती धारा, सुख लूटन ललचानी।।123।।

पुरुष नारि खेलत उमंग भरि, त्यागि सरीर संभार।
मिलत मोद भरि हटत हारि नहिं, धसत गसत बहुबार।।124।।

खेलत टूटि गए मुकता स्रग, मुकुत बृन्द छहराने।
मनु अपार सुख लेन तार गन हार-हार दरसाने।।125।।

होली के दोहे

बरस दिना सों आस यह, लागिरही मन माहिँ।
कब होरो आवै कबै उर, अभिलाष पुजाहिँ।।126।।

बड़े भाग सों आज यह, परब मिलौ प्रानेस।
अबतौ उचित न राखिबो, लाज सकुच को लेस।।127।।

हौं बदनामिनि साथ में, आखिर हों बदनाम
तौ फिरि मिलिबे में कहा, सोच सकुच को काम।।128।।

अधम उधारन अगति गति, पावन पतित कहाय।
केहि नातें हमतें करत, नाथ रूखाई हाय।।।129।।

एक बार हँसि हेरि मोहिँ, लीजे कंठ लगाय।
और न बसि चाहों कछू, कसक सबै कढ़ि जाय।।130।।

देहु न काहे जगत पर, प्रेम रंग बरसाय।
जातें सब कहुँ सबन को, एक रंग ह्वै जाय।।131।।

प्रेम भांग भखि तुमहिँ लखि सब बौरे बनिजाहिँ।
भांति-भांति के स्वांग फिरि, कबहुँ न कहूं लखाहिँ।।132।।

रंग भीने पट सों सदा, रहहु हृदय लपिटाय।
प्रेमदास की आस बस, प्रिय पूरन ह्वै जाय।।143।।

मोहन मलि रोरी दियो, बाल भाल करि लाल।
रोम रोम राजित पुलक, परमा बदन बिसाल।।144।।

छलि-छलि छै बलि-बलि रह्यो, मलि मलि कर बृजराज।
भलि-भलि बतियन मन हर्‌यो, हलि-हलि सखिन समाज।।145।।

रस भिजये दोऊ दुहुँनि, तऊ टिक रहे, टरैं न।
छवि सों छिरकत प्रेम-रँग, भरि पिचकारी नैन।।146।।

कविवर बिहारी के होली के दोहे

मिलन मनोरथ पूजि नित, करहु नेह निरवाह।
हम पागल प्रेमीन कौं, और चाहिये काह।।147।।

पीठ दिऐं ही नैक मुरि, कर घूँघट-पट टारि।
भरि गुलाल की मूठि सों, गई मूठि सी मारि।।148।।

गिरै कंपि कछु कछु रहै, कर पसीज लपटाय।
डारत मुठी गुलाल की, छुटत झुठी ह्वै जाय।।149।।

दियौ जु पिय लखि चखन में, खेलत फागु खियाल।
बाढ़त अति पीर सु, न काढ़त बनत गुलाल।।150।।

होली के सोरठे

न्हाय सरोवर मांहि, भीजे पट घर को चली।
कुच आंचर बिच बांहि, बिहंसति सकुचति सी हिये ।।151।।

परत कुम-कुमा रङ्ग, लपटि जात अंग कंचुकी।
झलकत उरज उतंग, अरुन किरनि मनु सिखर पै।।152।।